उपसंहार

उपसंहार

सन् **1960** के बाद मराठी साहित्य में दलित साहित्य एक स्वतंत्र प्रवाह के रूप में उभरा। इसके पहले किसी भी भारतीय भाषा में दलित साहित्य का स्वतंत्र प्रवाह प्रवाहित नहीं हुआ था। मराठी के दलित लेखकों ने अनुभूति और संवेदना के आधार पर दलित जनजीवन की पीड़ा को वाणी देकर दलितों की पीड़ा पर स्वतंत्र रूप में चिंतन किया। मराठी में दया पवार के 'बलुतं', प्र.ई.सोनकांबले के 'आठवणींचे पक्षी', माधव कोंडविलकर के 'मुक्काम पोस्ट देवाचे गोठणे', लक्ष्मण माने के 'उपरा', शंकरराव खरात के 'तराल अंतराल', दादासाहब मोरे के 'गबाळ', पार्थ पोळके के 'आभरान' , लक्ष्मण गायकवाड के 'उचल्या' आदि दलित आत्मवृत्तों के माध्यम से दलितों की पीड़ा को उकेरना शुरू किया। इन आत्मवृत्तों के साथ-साथ सन् **1960** के बाद मराठी में 'बाबूराव बागूल के 'सूड', केशव मेश्राम के 'हकीकत आणि जटायू' अशोक लोखंडे के 'निष्ठा', भीमसेन देठे के 'इस्कोट', सुधाकार गायकवाड के 'शुद्र' , बाबूराव गायकवाड के 'झळ' आदि दलित लेखकों के उपन्यासों में महाराष्ट्र के दलित जीवन की दु:खद स्थितियों का यथार्थ चित्रण को रूपायित किया है।

मराठी भाषा में प्रवाहित स्वतंत्र दलित साहित्य की धारा से पूरे भारतीय भाषाओं के साहित्य में खलबली मची। मराठी के दलित साहित्य के अनुकरण पर हिंदी में भी स्वतंत्र दलित साहित्य लिखा जाने लगा। हिंदी में प्रेमचंदजी के साहित्य में दलितों का चित्रण जरूर हुआ है, परंतु इसे संदर्भ के रूप में लाया गया था। मराठी के अनुकरण पर हिंदी में दलित जीवन पर सबसे पहला दलित उपन्यास, जगदीशचंद्र ने 'धरती धन न अपना', सन् **1972** में लिखा। इसके पूर्व भी रामदरश मिश्र के 'पानी के प्राचीर', शिवप्रसाद सिंह के 'अलग-अलग वैतरणी', डॉ.प्रभाकर माचवे के 'किशोर', अमृतलाल

नागर के 'नाच्यौ बहुत गोपाल', मन्नू भंडारी के 'महाभोज' मोहरसिंह यादव के 'बंजर धरती', तेजिंदर के 'उस शहर तक' आदि हिंदी उपन्यासों में दलित जन जीवन की पीड़ा को वाणी देने का काम प्रभावी रूप में साठोत्तरी हिंदी उपन्यास लेखकों ने किया है। हिंदी दलित उपन्यासों की अगली कड़ी के रूप में जयप्रकाश कर्दम के उपन्यास 'करुणा' और 'छप्पर' महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में हमने कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन की पीड़ा को तलाशने का काम किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय है 'जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों का अनुशीलन' इस विषय पर चिंतन करने के लिए जयप्रकाश जी के 'करुणा' और 'छप्पर' इन दो उपन्यासों का चयनकर इन उपन्यासों में चित्रित दलित जनजीवन की स्थिति और गति पर गहराई से चिंतन किया है। इस विषय के अनुशीलन से यह स्पष्ट कर दिया है कि कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों के केंद्र में दलित पीड़ा है। दलित जीवन को प्रत्यक्ष रूप में भोगनेवाले और अनुभव करनेवाले कर्दम जी ने दलितों में उभरी विविध चेतना प्रवृत्तियों की ओर संकेत करते हुए उनके जीवन में उभरे अनेक चढ़ावों-उतारों को यथार्थ रूप में रेखांकित किया है। इसमें हमने लेखक की जीवनी का उनके उपन्यास साहित्य पर प्रभाव कैसे पड़ा हैं। इसे भी दिखाने का प्रयत्न किया है।

जयप्रकाश कर्दम जी का व्यक्तित्व और कृतित्व उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचायक हैं। उनके जीवन में और साहित्य सृजन में संघर्षशीलता और निरंतर कर्म निष्ठता के दर्शन होते हैं। जयप्रकाश जी मानवतावादी मूल्यों के हिमायती हैं, जिससे उनकी पहचान संवेदनशील मन के लेखक, दलित मानसिकता की पीड़ा तथा मर्म के जानकार एवं डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी की विचारधारा के समर्थ भाष्यकार के रूप में होती है। जयप्रकाश जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने हिंदी दलित साहित्य को नया मोड़ देने का प्रयास किया है।

जयप्रकाश कर्दम जी का जन्म उत्तरप्रदेश राज्य के इन्दरगदी नामक गाँव में एक दलित परिवार में होने के कारण दलित जीवन की विविध पीड़ाओं को उन्होंने भोगा है। पिता हरिसिंह कर्दम तथा माता अतरकली की कोख से उनका जन्म हुआ। माता-पिता एक दलित सर्वहारा किसान होने के कारण फला-फूला परिवार का भरण-पोषण करते समय इनके सामने अनेक दिक्कतें आती है।असमय पिताजी की बीमारी के कारण मृत्यु होने से कर्दम जी पर परिवार के भरण-पोषण की जिम्मेदारी आती है। इस प्रतिकूल परिस्थिति ने कर्दम जी के अनुभव विश्व को विस्तृत बना दिया है।

जयप्रकाश जी बचपन से ही पढ़ाई में कुशाग्र बुद्धी के छात्र थे। साथ ही खेल कूद में भी अग्रेसर थे। पिताजी की असमय मृत्यु के कारण उन्होंने मेहनत-मजदूरी के साथ-साथ अपनी पढ़ाई भी जारी रखी। जयप्रकाश कर्दम जी ने इन सभी आर्थिक अभावों से संघर्षरत रहकर अपनी पढ़ाई जारी रखी। उन्होंने उच्चतम उपाधियों को कड़े परिश्रम के साथ हासिल किया, उन्होंने हिंदी, इतिहास, दर्शनशास्त्र में एम.ए. की उपाधियाँ प्राप्त की, तथा हिंदी में 'रागदरबारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन' शोध-प्रबंध पर पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की, लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं में भी सफलता हासिल करके सरकारी उच्चपदस्थ सेवा में सक्रिय भूमिका अदा करने में आज तक वे सफल रहें है। प्रतिकूल परिस्थिति में उन्होंने अपनी योग्यता बढ़ाने में कोई कसूर नहीं छोड़ी।

जयप्रकाश कर्दम जी का वैवाहिक जीवन श्रीमती ताराजी के साथ आनंद के साथ बीतता जा रहा है। उनकी पत्नी का राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दिल्ली में अध्यापक होने के नाते परिवार में शिस्त देखने को मिलती है।उन्हें तीन संतान हैं, जिनमें दो बेटियाँ और एक बेटा है।

जयप्रकाश कर्दम जी साधारण तरीके से रहना और हमेशा जीवन में उच्च विचारों के अनुरूप जीवनयापन करना स्वीकारते हैं। वे अपने जीवन की सफलता में कठोर परिश्रम, संघर्ष और संयम को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। वे उनके जीवन में गुरूजनों

तथा समाज सुधारकों से हमेशा प्रभावित तथा प्रोत्साहित रहें हैं। वे गौतम बुद्ध, कबीर, जोतिबा फुले और डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर आदि के मानवतावादी विचारों से प्रभावित रहें हैं। जयप्रकाश कर्दम जी का व्यक्तित्व प्रेरणादायी हैं। वे अपने जीवन में अनुशासन, शिक्षा, बंधुता, प्रामाणिकता इन पहलुओं को स्वीकारते हुए भविष्य के प्रति सकारात्मक सोच को अपनाते हैं। उनके व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर प्रभाव लक्षित होता है।

जयप्रकाश कर्दम जी उपन्यास साहित्य में अनुभूति और संवेदना को अधिक स्थान देते हैं। उनकी लेखनी ने अनेक साहित्यिक विधाओं के माध्यम से मानव को केंद्र में रखकर मानवतावादी चिंतन को ही रूपायित किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में शोषित, पीड़ित, उपेक्षित दलितों की व्यथा-कथा और वेदना को यथार्थ रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया हैं। समाज में व्याप्त विषमता को ध्वस्त कर साम्यवादी समाज निर्माण के विचारों को रेखांकित किया है। अर्थात इनका उपन्यास साहित्य सृजन सामाजिक क्रांति का द्योतक बना है।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि जयप्रकाश कर्दम जी के जीवन का, उनके विचार तथा आचारों का उनके साहित्य सृजन में प्रतिबिंब दृष्टिगोचर होता हैं। उनका व्यक्तित्व तथा कृतित्व युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी हैं। जयप्रकाश कर्दम एक समाजाभिमुख, चिंतनशील, जागृत साहित्यकार के रूप में हिंदी दलित साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर तथा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार के रूप में परिचित हैं। उनके उपन्यासों के कथ्य से उनके व्यक्तित्व का जुड़ाव देखने को मिलता है।

जयप्रकाश कर्दम के विवेच्य उपन्यासों 'करुणा' और 'छप्पर' के कथावस्तु का वस्तुपरक विवेचन करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि जयप्रकाश कर्दम जी ने भारतीय समाज में स्थित दलित समाज जीवन के यथार्थ को उजागर करते हुए गौतम बुद्ध तथा डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर इन महान विभूतियों के मानवतावादी मूल्यों से निहित आदर्श समाज की संकल्पना को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। विवेच्य

उपन्यासों का कथ्य अनुभूति एवं संवेदना के तथ्यों को केंद्र में रखकर भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित सदियों से पीड़ित शोषित समाज के जीवन संघर्ष की गाथा से सृजित एक महत् उपलब्धि है। विवेच्य उपन्यासों में भारतीय समाज व्यवस्था में व्याप्त धार्मिक पाखंडता, अंधश्रद्धा, ईश्वर की सत्ता, रूढ़ि-परंपरा आदि को मानव शोषण के साधन मानकर इन्हें नकार कर समस्त सृष्टि में मानव की सत्ता को ही सर्वोपरी महत्त्व प्रदान किया है। विवेच्य उपन्यासों के कथ्य में दलितों की पीड़ा, यातना, दारिद्रय, शोषण, अन्याय, अत्याचार के मूल में स्थित कारणों को तलाशते हुए उनका उन्मूलन करने के लिए सामाजिक जागृति का दीप प्रज्वलित करते हुए क्रांतिकारी विचारों में शिक्षा, संगठन, संघर्ष के महत्व को रेखांकित किया है। दिग्भ्रमित तथा दिशाहीन समाज को जीवन की सही राह दिखाकर सुख-समृद्धी से संपन्न जीवन के लिए गौतम बुद्ध की विचारधारा की महत्ता को उजागर किया है।

विवेच्य उपन्यासों के कथ्य में समाज में व्याप्त विषमतावादी व्यवस्था को नष्ट करके समता, स्वतंत्रता, बंधुता तथा न्याय इन मानवतावादी मूल्यों का प्रचार-प्रसार किया है। विवेच्य उपन्यासों के कथ्य में दलित समाज के विविध आयामों का सूक्ष्म, व्यापक एवं वैविध्यपूर्णता के साथ सम्यक अंकन किया है। इससे स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यासों का कथ्य मौलिक तथा विश्वसनीयता से संपन्न है। कथ्य में निहित विचारधारा दलित समाज में वैचारिक जागृति की और सामाजिक परिवर्तन की माँग करके समताधिष्ठित समाज का निर्माण के मूल विचारधारा को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने में सक्षम दृष्टिगोचर है।

विवेच्य उपन्यासों में लेखक ने दलित जनजीवन के विविध पहलुओं की ओर संकेत करते हुए दलित जीवन के स्वास्थ एवं संपन्नता की ओर अधिक सतर्कता दिखाई है।

जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों के पात्र एवं चरित्र-चित्रण का परिचयात्मक परिशीलन करने के पश्चात हमें यह ज्ञात होता है कि उपन्यास के कथ्य में निहित उद्देश्य की सक्षम अभिव्यक्ति पात्रों की सजीवता तथा उनकी वास्तविकता पर ही संपन्न हुई है। इस दृष्टि से स्पष्ट है कि जयप्रकाश कर्दमजी ने जिस युग परिवेश को प्रस्तुत रचनाओं 'करुणा' और 'छप्पर' में रेखांकित किया है उसी के परिवेशानुरूप ही पात्रों का चयन तथा प्रस्तुतीकरण किया है। इन विवेच्य उपन्यासों के अधिकतर पात्र दलित हैं, तो कई पात्र सवर्ण हैं। इन दो वर्गो के पात्रों में वैचारिक संघर्ष के साथ-साथ वैचारिक एकता भी दिखाई देती है।

विवेच्य उपन्यासों में पात्रों के द्वारा दलित समाज की समस्याओं को उदघाटित करते हुए उनका समाधान भी उन्हीं पात्रों के चरित्र-चित्रण के द्वारा प्रस्तुत किया है। जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यासों में मुख्य पात्रों के समान गौण पात्रों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मुख्य पात्र के चरित्र को अधिक उभारने के लिए ये पात्र सहायक होते हैं।

विवेच्य उपन्यासों के पात्र मानवीय संवेदनाओं को स्पर्श करते हुए सामाजिक दायित्वबोध के निर्वाह में कर्तव्यदक्ष हैं। जयप्रकाश कर्दम ने अपनी व्यापक अनुभूति को आधार बनाकर योग्य पात्रों का सृजन किया है। उनके विवेच्य उपन्यासों के अधिकांश पात्र दलित समाज के यथार्थ प्रतिनिधि बने हुए दृष्टिगोचर है। इन्होंने कथ्य के साथ पात्रों का चयन भी समाज से ही स्वीकार किया है। विवेच्य उपन्यासों के सभी पात्र सजीव, संघर्षशील, प्रेरणादायी तथा समता, स्वतंत्रता, बंधुता तथा न्याय इन मानवतावादी मूल्यों के गुणों से संपन्न हैं। ये पात्र पाठकों पर गहरा प्रभाव छोड़ने में सक्षम हैं। इनमें से कई पात्र खली तथा दुष्ट प्रवृत्ति के भी हैं जो अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप नायकों के कार्य में रोड़े अटकाते हैं। ऐसे पात्रों का लेखक ने अम्बेड़करवादी विचारधारा और गांधीवादी विचारधारा से मनपरिवर्तन किया है। खासकर इन विवेच्य उपन्यासों की नायिकाओं को

लेखकने सवर्ण वर्ग से लिया है। 'करुणा' उपन्यास की करुणा और 'छप्पर' उपन्यास की रजनी सवर्ण समाज के प्रतिनिधि होकर भी दलित नायक रमेश और चंदन की सहायता करके दलित उद्धार कार्य में इन दलित नायकों का मार्ग प्रशस्त करती हैं। ये दोनों नायिकाएँ शांति के मार्ग पर चलकर स्वस्थ समाज का निर्माण करना चाहती हैं। रजनी अपने पिता ठाकुर हरनामसिंह का मन परिवर्तन करती है, तो करुणा बौद्ध धम्म का स्वीकार करके विश्वशांति का नारा लगाती है। इन नारी पात्रों को लेखक ने भारतीय नारी संस्कृति की चौखट में बिठाकर उनके दलित नायकों के प्रति प्रेम को मुक दिखाया है। उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जयप्रकाश कर्दम जी ने अपनी रचनाओं में निहित उद्देश्य को अर्थपूर्ण तथा सशक्त रूप में अभिव्यक्त करने के लिए पात्रों का चयन तथा प्रस्तुतीकरण बड़ी गहराई के साथ सूक्ष्म दृष्टि से किया है।

जयप्रकाश कर्दम ने विवेच्य उपन्यासों में कथ्य, पात्र एवं चरित्र-चित्रण के साथ-साथ संवाद योजना को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। सशक्त औपन्यासिक कृतियों में सक्षम संवाद योजना का महत्त्व भी अक्षुण्ण है। संवाद ही पात्रों की सक्षम अभिव्यक्ति का साधन है। तथा संवाद ही कथावस्तु को गतिशील बनाकर पात्रों के चरित्र-चित्रण को उद्घाटित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उपन्यासों की श्रेष्ठता के लिए संवादों में सारगर्भिता और मार्मिक शब्दों का प्रयुक्त करना आवश्यक है।

जयप्रकाश कर्दम ने विवेच्य उपन्यासों 'करुणा' और 'छप्पर' में संवादों को उत्कृष्ट एवं जीवित रूप में रूपायित करने के लिए अकृत्रिम, चुस्त, बोधगम्य, धारावाही, सहज संप्रेषणीय संवादों का निर्माण किया है। विवेच्य उपन्यासों में निहित संवाद योजना निश्चित उद्देश्य की पूर्ती हेतु बेहद रोचक ही नहीं बल्कि पाठकों को आरंभ से अंत तक बाँधे रखने में सक्षम दृष्टिगोचर हैं। विवेच्य उपन्यासों में निहित संवादों के प्रयोग में भाषा को रोचक सजीव एवं सार्थकता प्रदान की है। इन उपन्यासों में संवादों की भरमार होते हुए भी क्लिष्टता की मात्रा कहीं भी दिखाई नहीं देती। यह संवाद

योजना सामाजिक यथार्थ की परिस्थितियों को उद्घाटित करनें में सक्षम है। विवेच्य उपन्यासों में सफल अभिव्यक्ति की दृष्टि से सही दिशा में संवाद योजना का खयाल रखा है जिससे संवाद-योजना सुनियोजित एवं प्रभावशाली रूप में द्रष्टव्य हैं तथा इन रचनाओं के संवाद बल और प्राण के रूप में स्थित हैं।

विवेच्य उपन्यासों में व्याख्यात्मक, आवेशात्मक, व्यंग्यात्मक, गंभीर, तर्क पूर्ण, संक्षिप्त, उद्देश्यपूर्ति में सहायक, चारित्रिक विशेषताओं की अभिव्यक्ति में सहायक, विवरणात्मक, अलंकारिक, व्यावहारिक और मार्मिक आदि विभिन्न प्रकार के संवाद है। संवादों के कारण पात्रों की मानसिकता उनके स्वभावगुण, दलित समाज के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, परिवार के प्रति उनकी स्नेहसिक्तता, नैतिक प्रतिबद्धता आदि के दर्शन भी होते हैं।

विवेच्य उपन्यासों में निहित परिवेश लेखक की उद्देश्य पूर्ति का वाहक है। सामाजिक परिवेश से जुड़े रचनाकार कर्दम जी ने अपने अनुभूत जीवन सत्य और मूल्यों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। उसने अपने परिवेश को दृष्टि में रखकर ही उसके अनुरूप साहित्य का सृजन किया है।

जयप्रकाश कर्दम जी ने विवेच्य उपन्यासों 'करुणा' और 'छप्पर' में भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित दलित समाज जीवन की यथार्थता एवं उनके जीवन परिवेश की अभिव्यक्ति का प्रामाणिक दस्तावेज रेखांकित किया है। इन उपन्यासों के कथ्य में निहित तथ्य को सत्य के रूप में प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने परिवेश की यथार्थ पृष्ठभूमि को आधार बनाया है।

विवेच्य उपन्यासों के परिवेश के अंतर्गत सामाजिक परिवेश में दलित समाज की वेदना, उनका दर्द, उनकी त्रासदी, उनकी समस्याओं आदि का चित्राकंन किया है। इन बातों के साथ-साथ समाज व्यवस्था में स्थित जातिवाद और छुआछूत को उजागर करके इस विषाक्त परिवेश में समय के साथ आये बदलावों का चित्रण भी किया है।

विवेच्य उपन्यासों के आर्थिक परिवेश के अंतर्गत दलित समाज जीवन की आर्थिक दशा, दारिद्रय, विवशता, मजबूरी आदि के वास्तविक चित्रण का अंकन किया है। दरिद्रता से टकराने के लिए किये जानेवाले परिश्रम, उसमें होनेवाला शोषण आदि को परिवेशानुकूल चित्रित किया है।

विवेच्य उपन्यासों के राजनीतिक परिवेश के अंतर्गत भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित राजनीतिक परिवेश तथा उसमें दलित समाज की स्थिति का अंकन किया है। साथ ही समाज में स्थित भ्रष्ट राजनीति तथा राजकीय नेताओं के कुकर्मो की पोल खोलते हुए भ्रष्ट राजनीति को ध्वस्त कर एक समताधिष्ठित मानवतावादी मूल्यों से समन्वित राजनीति को स्थापित करने के प्रयासों का अंकन किया है।

विवेच्य उपन्यासों के धार्मिक परिवेश के अंतर्गत भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित प्राचीन काल से धर्म के विकृत रूप को स्पष्ट करते हुए उसके सहारे दलित समाज सदियों से धर्म, ईश्वर के नाम पर पंडित, पुरोहितों के हाथों किस तरह प्रताड़ित हैं इसका यथार्थ रूप में अंकन किया है और शिक्षा तथा समाज सुधारकों द्वारा समय के साथ आये इस परिवेश में परिवर्तन को भी उजागर किया है। तथा विषमतावादी धार्मिक परिवेश को बदलकर एक समतावादी धर्म की विचारधारा को उजागर किया है।

विवेच्य उपन्यासों में दलित जनजीवन के चित्रण के लिए अनुकूल परिवेश बनाया है। हरिया का घर, सुक्खा का परिवार ठाकुर हरनामसिंह का गाँव जीवन में आतंक, ठाकुरों द्वारा गाँव के दलितों का होनेवाला शोषण, नारी उत्पीड़न, दलित नारी का शारीरिक, मानसिक शोषण, ठाकुरों का दलित शिक्षित पीढी के प्रति देखने का दृष्टिकोण, दलित सर्वहारा लोगों की खस्ता हालत, धर्म परिवर्तन के लिए उपयुक्त वातावरण, मठ-मंदिरों का परिवेश, वहाँ के धर्म पंड़ितो की आतंककारी नीति, ठाकुरों की साधन संपन्नता आदि को परिवेश के रूप में उभारकर लेखक ने गाँव के बाहर की दलित बस्ती की स्थिति और गति को परिवेश के रूप में उभारा हैं। दलितों की स्थिति को

सुधारने के लिए शैक्षिक अधिष्ठान की आवश्यकता, उन पर होनेवाले अन्याय को दूर करने के लिए आंदोलनों की आवश्यकता आदि को भी परिवेश के रूप में उभारकर कर्द म जी ने दलित समाज उत्थान के लिए परिवेशजन्य विचारधारा को प्रस्तुत किया है।

जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों में निहित भाषा का अध्ययन करने के पश्चात हम कह सकते हैं कि उनकी भाषा विवेच्य उपन्यासों के कथ्य, पात्र, स्थिति, काल, विषय एवं भावों के अनुरूप दृष्टिगोचर है। भाषा में भाव या विचारों की अभिव्यक्ति मूलत: शब्द से ही होती है। इसी तथ्य के अनुसार जयप्रकाश कर्दम जी भाषा समृद्धि का आधार उनके विपुल शब्द भंड़ार का प्रयोग है। उन्होंने भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित बृहद दलित समाज वर्ग की व्यथा, कथा, पीड़ा, वेदना को वाणी देने के लिए जनमानस की भाषा को अपनाकर अपनी मन की बात, विचार तथा हृदय की भावनाओं को यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया है। उन्होंने विवेच्य उपन्यासों में अनेक विविध शब्दों का प्रयोग सार्थक रूप में किया है जिनमें - 'तत्सम शब्द', 'तद्‌भव शब्द', 'देशज शब्द', 'विदेशी शब्द', 'अरबी शब्द', 'फारसी शब्द', 'अंग्रेजी शब्द', 'संस्कृत शब्द'। अन्य शब्दों में - 'ध्वन्यार्थक शब्द', 'दविरूक्त शब्द', 'निरर्थक शब्द', 'संयुक्त शब्द', 'अपशब्द' आदि शब्दों का प्रयोग किया है। उपर्युक्त शब्द प्रयोगों के साथ ही उन्होंने भाषा को सौंदर्य युक्त गुणों से संपन्न बनाने के लिए - पात्रानुकूल भाषा, उपदेशात्मक भाषा, आत्मकथात्मक भाषा, आक्रमक भाषा, क्रांतिकारी भाषा, प्रेरणादायी भाषा, वर्णनात्मक भाषा, मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों के प्रयोग के साथ समस्त भाषिक सौंदर्य साधनों का यथाचित्र रूप में प्रयोग किया हुआ है।

जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों में निहित भाषा का रूप सरल, सहज तथा उद्देश्यगत पहलुओं के तथ्यों से समन्वित है जिससे विवेच्य रचनाओं का कथ्य मौलिक सरस तथा कलात्मकता की दृष्टि से सक्षम दृष्टिगोचर होता है। उनकी भाषा समाज में व्याप्त अन्याय-अत्याचार, शोषण के खिलाफ विद्रोह की और प्रतिरोध की

भावना को स्पष्ट कर देने के लिए उपयुक्त है। जिससे उनकी भाषा में सामाजिक परिवर्तन की छटपटहट एवं दु:खद परिस्थितियों पर आक्रोश व्यक्त हुआ हैं।

जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों में सशक्त भाषा की अभिव्यक्ति के साथ-साथ निश्चित उद्देश्यपूर्ति के विविध आयामों को भी गहराई के साथ उद्घाटित किया है। विवेच्य उपन्यासों में दलित जीवन की त्रासदी अर्थात दलित जीवन में व्याप्त अनेक समस्याओं का यथार्थ रूप में अंकन किया है।

जयप्रकाश जी ने विवेच्य उपन्यासों द्वारा अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए उद्देश्य पूर्ति का सफलतापूर्वक प्रयत्न किया है। विवेच्य रचनाओं द्वारा उन्होंने आजादी के साठ वर्ष के उपरांत भी दलितों की स्थिति और गति में अधिक परिवर्तन न होना, दलितों के शोषण का चक्र अधिक गतिमान हो जाना, सवर्ण समाज की संकुचित मनोवृत्ति के कारण समाज में निर्मित विषम स्थितियों को स्पष्ट करना, दलित नारियों पर होने वाले शोषण के खिलाफ विद्रोह की या क्रांति की आवश्यकता पर बल देना, दलित विकास के लिए उनमें शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार करना, दलितों में संगठन शक्ति को जागृत करके समाज के अवैध घटकों का मुकाबला करना, दलितों को शैक्षिक व्यवस्था में व्यवधान लानेवाली शक्तियों का विरोध करना, दलितों में स्थित दारिद्रय को निपटाने के लिए उनमें श्रम की प्रतिष्ठा को जगाना, उनके श्रम को उचित मूल्य प्राप्त होने के लिए प्रयत्न करना, विश्वशांति के लिए सर्वसमावेशक धर्म का स्वीकार करना, मनपरिवर्तन की प्रक्रिया के माध्यम से दलित विकास में रोडे अटकानेवालों को हटाने के लिए परिवर्तन की प्रक्रिया पर जोर देना, दलितों के अन्याय अत्याचार को निपटाने के लिए क्रांति का तथा विद्रोह का नारा लगाना, दलित समाज का प्रबोधन करना आदि अनेकानेक उद्दश्यों की परिपूर्ति के लिए इन उपन्यासों की रचना लेखक ने की है। दलित समाज की व्यसनाधीनता पर भी प्रकाश ड़ालकर उनका प्रबोधन किया है।

विवेच्य उपन्यासों में कर्दम ने दलित समाज में व्याप्त-व्यसनाधीनता, जनता की रक्षक भक्षक बनी पुलिस व्यवस्था, बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणाम, भूख की समस्या, नैसर्गिक आपत्ति में बाढ़ तथा अकाल से त्रस्त दलित समाज, पूँजीपतियों-साहुकारों द्वारा निर्धन दलितों का शोषण, धर्म-पंड़ितों द्वारा अज्ञान लोगों का देवी-देवता के नाम पर आर्थिक-मानसिक शोषण, तथा नारी शोषण आदि दलित जीवन की समस्याओं को विवेच्य उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। साथ ही दलित समाज में समय के साथ आयी नवजागृति तथा चेतना को दर्शाया है। लेखक ने दलित समाज के शोषण के विविध आयाम, ईश्वर तथा धार्मिक पाखंड़ता के प्रति विद्रोह व्यक्त किया है। भ्रष्ट तथा शोषक समाज व्यवस्था के एवं पूँजीपतियों के सामंतवादियों के प्रति विद्रोह व्यक्त किया है। साथ ही नारी विद्रोह को स्पष्ट करके दलित नारी परंपरा की चौखट को तोड़कर निर्भय बनती जा रही दलित नारी को दिखाया है।

कबीरवादी, गांधीवादी, अंम्बेड़करवादी, मार्क्सवादी विचारधारा के अनुकरण पर लेखक ने अपने विचार पात्रों के द्वारा स्पष्ट किये हैं।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित दलित चेतना पर चिंतन करते हुए कर्दम जी ने दलित चेतना की आवश्यकता पर बल दिया है। उनका रचना संसार दलित समाज का दर्पण ही नहीं बल्कि सामाजिक जागृति तथा दलितों में वैचारिक क्रांति का द्योतक बना है। उन्होंने दलित, पीड़ित, शोषित मानव में आये वैचारिक परिवर्तन को रेखांकित किया है। कर्दम जी ने आर्थिक चेतना, नारी चेतना, शिक्षा चेतना, धार्मिक चेतना, सामाजिक सम्मान तथा स्वाभिमान से उत्पन्न चेतना, राजनीतिक चेतना, समाजकार्य से उत्पन्न चेतना और धर्मपरिवर्तन की चेतना आदि चेतनाओं पर मौलिक चिंतन प्रस्तुत करके दलित समाज के विकास में चेतना की आवश्यकता पर विचार प्रस्तुत किये हैं।

उपलब्धियाँ :

"जयप्रकाश कर्दम जी के उपन्यासों का अनुशीलन" विषय पर प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध में चिंतन करने के उपरांत निम्नलिखित तथ्य हमारे हाथ आते हैं, जो इस लघु शोध-प्रबंध की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं -

1. जयप्रकाश कर्दम जी के आचार-विचार प्रेरणादायी तथा दिशादिग्दर्शक हैं।
2. जयप्रकाश कर्दम जी की विवेच्य औपन्यासिक कृतियाँ दलित समाज-जीवन का दर्पण ही नहीं बल्कि उसमें सामाजिक जागृति की तथा वैचारिक क्रांति की माँग भी है।
3. जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यास मानवतावादी मूल्यों के समर्थक हैं।
4. जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यास गौतम बुद्ध और डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी के विचारों के वाहक हैं। बींच-बींच में महात्मा गांधी एवं मार्क्स की विचारधारा को भी प्रवाहित करते है।
5. जयप्रकाश कर्दम जी ने अपने विवेच्य उपन्यासों में सृष्टि में निहित शाश्वत सत्य को तलाशने की कोशिश की हैं।
6. जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यास आदर्श समाज की संकल्पना और विश्वकल्याण या विश्वशांति की विचारधारा को प्रस्तुत करतें हैं।
7. विवेच्य उपन्यासों का कथ्य पाठकों को गतिशील, विचारशील तथा चिंतनशील बनने के लिए चेतित करता हैं।
8. जयप्रकाश कर्दम जी ने विवेच्य उपन्यासों में 'ईश्वर' की सत्ता को नकारते हुए मनुष्य की सत्ता को ही सर्वोपरी स्वीकारा हैं।
9. जयप्रकाश कर्दम जी के उपन्यासों के पात्र दलित समस्याओं से सन्न रहकर भी प्रेरणादायी, कर्तव्यदक्ष, सामाजिक दायित्व के प्रति प्रतिबद्ध, उर्ध्वगामी, क्रांतिकारी, समाज प्रबोधन में अग्रणी हैं, मानवतावादी हैं, प्रतिकूल परिस्थितियों से टकराने वाले हैं।

10. परिवेशजन्य परिस्थिति में दलितों की युगानुरूप स्थिति का चित्रण करने का प्रयास जयप्रकाश जी ने किया है।

अध्ययन की नई दिशाएँ :

जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों पर स्वतंत्र रूप में निम्नलिखित विषयों पर शोध कार्य किया जा सकता हैं -

1. "जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों में दलित चेतना"
2. "जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों में अम्बेड़करवादी विचारों का मूल्यांकन"
3. जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों में मानवतावाद"
4. "जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों में दलित जीवन का यथार्थ"
5. "जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों में गौतम बुद्ध के विचारों का मूल्यांकन"

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के दौरान प्राप्त हुए हैं। आशा ही नहीं बल्कि विश्वास हैं कि भविष्य में उपर्युक्त विषयों पर शोधार्थी स्वतंत्र रूप में शोध कार्य संपन्न करेंगे।

* * * * * * * * * * * *